गुरुतत्व

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वराः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

वास्तव में, धर्म की एक सीमा होती है। हिंदू धर्म की कोई सीमा नहीं है। यह इसलिए है कि हिंदू (हिंदुत्व) धर्म नहीं है,

हिंदू संस्कृति है जो प्रकृति के साथ जुड़ी हुई है।

जिसमें अनेक देवता हैं, अनेक गुरु हैं, ध्यान की अनेक पद्धतियाँ हैं, योगासन है, प्राणायाम है, ध्यान है, शास्त्रीय संगीत है, वादन है, नृत्य है, शास्त्र है, पशु देवता है, वृक्ष देवता है, नदी देवता है, समुद्र देवता है, सूर्य देवता है, चंद्र देवता है। ये सभी तो प्रकृति से जुड़े हैं।

इसीलिए हिंदू संस्कृति को हिंदू धर्म के दायरे में बाँधा नहीं जा सकता। इस संस्कृति में तो प्रत्येक मनुष्यमात्र का विचार किया गया है। सारे विश्व के प्राणीमात्र के लिए सोचा गया है।

और धर्म कहलाने के लिए इसके पास न कोई एक देवता है और न एक निश्चित ग्रंथ। कोई भी निश्चित सीमा नहीं है।

यह तो खुली किताब है जो आदिकाल से लिखी जा रही है और आज तक बंद नहीं हुई है। आज भी कोई गुरु आकर अपनी चार बातें उसमें जोड सकता है।

इसमें पूजा के माध्यम से प्रकृति के साथ जुड़ना सिखाया जाता है। पर्वत की पूजा,

नदी की पूजा, पेड़ की पूजा, चंद्र की पूजा, सूर्य की पूजा, साँप की पूजा, गाय की पूजा, बंदर की पूजा, वगैरह-वगैरह। यानि 'सर्वत्र परमात्मा है', यह बताने का उद्देश्य है।

लेकिन लोग पूजा और कर्मकांड को पकड़कर बैठ गए तो यह लोगों का दोष है, पूजापद्धति का नहीं।

पूजा यानि किसी एक माध्यम पर चित्त एकत्र करके बाद में भीतर की यात्रा करना है।
(संदर्भ: हिमालय का समर्पण योग भाग - २)

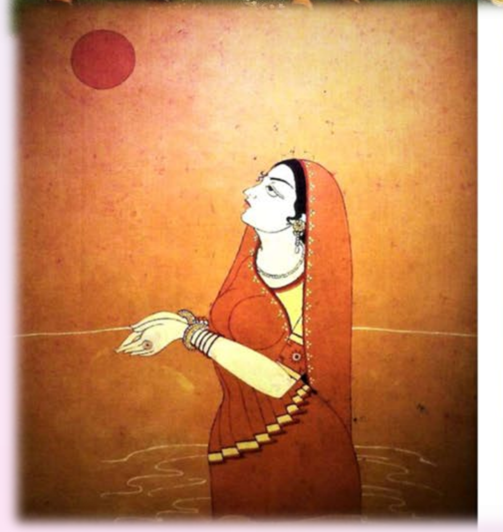
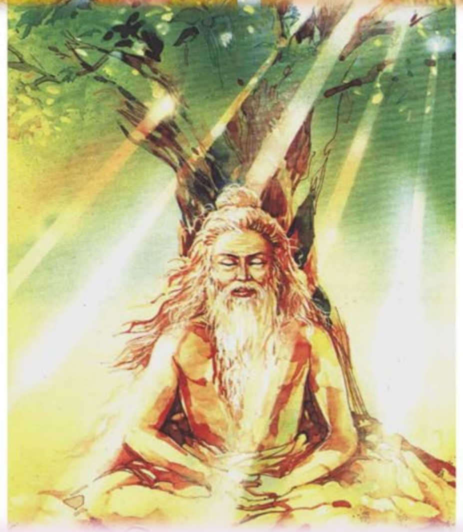

Sri Yantra (OM) Mandala

OM sound on a Tonoscope

भारतीय संस्कृति अनुभूति पर आधारित है और उसी अनुभूति के आधार पर सद्‌गुरु को बड़ा महत्त्व दिया गया है। इसीलिए सद्‌गुरु के महत्त्व को समझाने के लिए कहा गया है,
'गुरु साक्षात् परब्रह्म' यानी गुरु परमात्मा का आज का साक्षात् स्वरूप होता है।

- ❖ भारतीय संस्कृति ने गुरु के महत्त्व को जाना था। और इसीलिए गुरुकृपा यहाँ पर विभिन्न रुपों में बरसती रहती है।
- ❖ किसी को भी शरीर से ऊपर आत्मा के रुप में देखने की दृष्टि गुरुसंस्कृति की देन है।
- ❖ गुरुतत्त्व कोई शरीर नहीं है जो नाशवान हो। गुरुतत्त्व शाश्वत होता है।
- ❖ वह समय-समय पर परिस्थिति के अनुसार अपना माध्यम बदलते रहता है।

गुरुतत्त्व परमात्मा की वह शक्ति है जो प्रत्येक मनुष्य के लिए एक समान रूप से प्रकाशित होती है। हाँ, उनके घर में अधिक प्रकाशित होती है जो अपने घर के दरवाजे, खिड़कियाँ अधिक रूप से खोलते हैं। साधक अपना अस्तित्व जितना समाप्त करेगा, उतना ही अधिक वह परमात्मा का माध्यम बनेगा ।

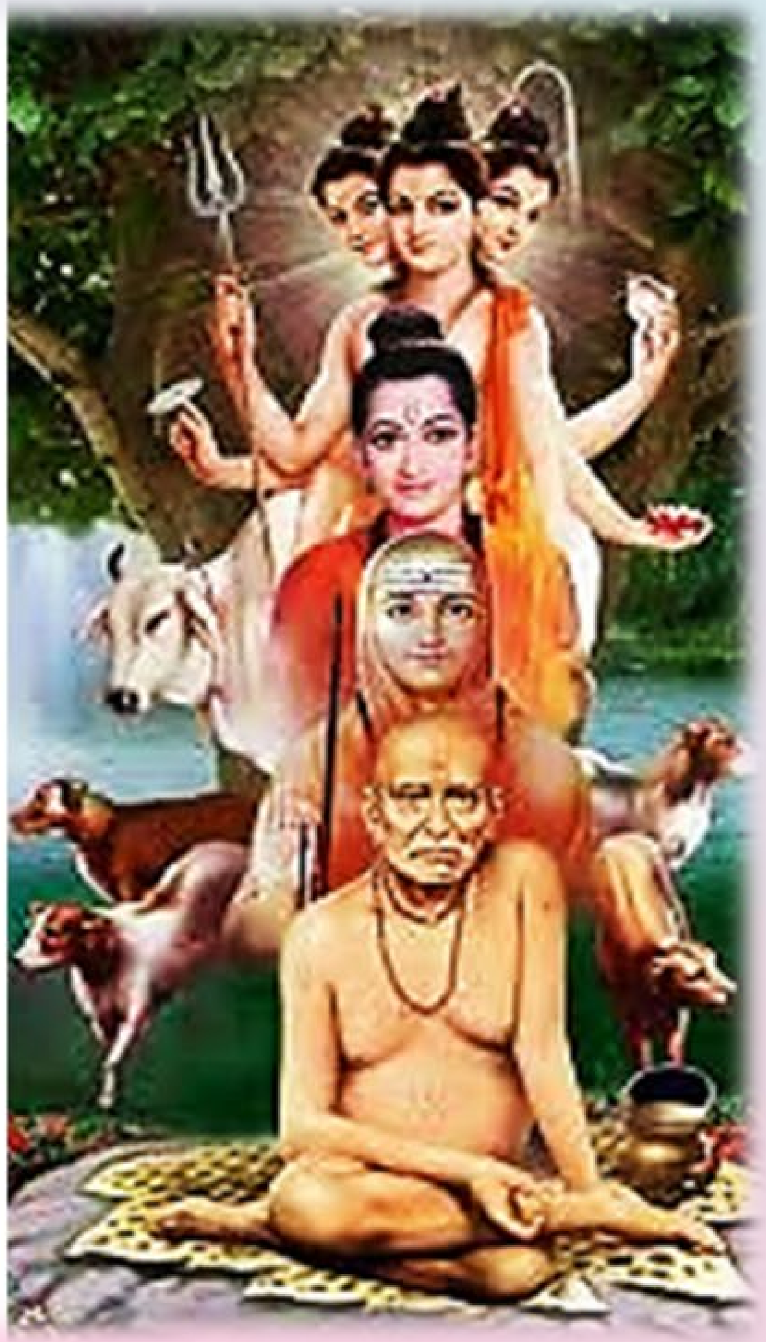
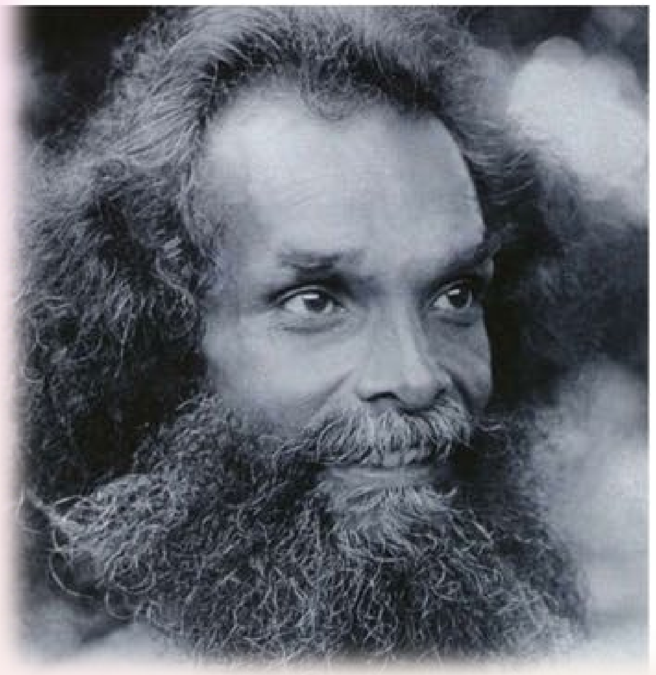

आत्मिक सामूहिकता:

❖ प्रकृति हमारे चारों ओर है। लेकिन जहाँ प्रकृति की सामूहिकता में हम जाते हैं, वहाँ जा करके हमको अच्छा लगता है। इसीलिए,
पहाड़ के सान्निध्य में हमको अच्छा लगता है,
नदी के सान्निध्य में हमको अच्छा लगता है,
वृक्षों के सान्निध्य में हमको अच्छा लगता है।

❖ इसका कारण है, पँचमहाभूतों से हमारा शरीर बना हुआ है। पँचमहाभूतों में जैसे ही समाहित हो जाते हैं, जैसे ही जुड़ जाते हैं, हमको अच्छा लगता है। क्योंकि हमारा मूल स्वरुप वही है।

❖ लेकिन शरीर हमने धारण किया है तो शरीर का एक दोष, शरीर का एक विकार अनायास ही हमारे भीतर आ गया है –
उसको 'विचार' कहते है। और यह विचार हमको पहाड़ से अलग करता है, हमको नदी से अलग करता है, हमको समुद्र से अलग करता है।

❖ सद्‌गुरु के समाधि में भी सामूहिकता की शक्ति होती है क्योंकि समाधि में वह शरीर रखा होता है जो अपने जीवनकाल में लाखों लोगों के साथ जुड़ा हुआ होता है और लाखों लोग उस शरीर के साथ।

❖ समाधि स्थान की ऊर्जा भी हमें अन्तर्मुखी ही करती है,
इसी के कारण हमें वहा अच्छा लगता है।
यही स्थिति जीवंत सद्‌गुरु के सान्निध्य में भी प्राप्त होती है।

❖ सद्‌गुरु भी वह शरीर है जिस शरीर के साथ लाखों आत्माएँ जुड़ी हुई हैं जो शरीर के साथ दिखती नहीं हैं पर अनुभव होती हैं।
जीवंत सद्‌गुरु के पास जीवंत इच्छाशक्ति होती है।

❖ सद्‌गुरु के सान्निध्य में अच्छा इसलिए लगता है क्योंकि सद्‌गुरु अन्तर्मुखी होता है।
और उसके सान्निध्य में हम स्वयं भी अन्तर्मुखी हो जाते हैं।
हम हमारी ही आत्मा के करीब हो जाते हैं। और इसीलिए अच्छा लगता है। हमें हमारी आत्मा ही खींचकर सद्‌गुरु के सान्निध्य में ले जाती है।

जीवंत सद्‌गुरु कौन है...?

- ❖ हमको अगर हमारा चेहरा देखने का है तो हमको मिरर की आवश्यकता लगेगी, आईने की आवश्यकता लगेगी। जब आईना रहेगा तो हमको हमारा चेहरा दिखेगा। ठीक उसी प्रकार से जब तक हमको कोई अंतर्मुखी नहीं करता, जब तक हमको कोई हमारे आत्मा तक लेके नहीं जाता तब तक आत्मा का एहसास हमको नहीं होता है।
- ❖ जीवंत सद्‌गुरु परमात्मा का आज का माध्यम होता है। इसलिए पास होता है, आसानी से पकड़ा जा सकता है। आज की परिस्थिति के अनुसार होता है।
- ❖ आज के प्रश्नों के उत्तर दे सकता है, आज की परिस्थिति में जो योग्य हो, वही उपदेश वह करता है।
- ❖ जीवंत सद्‌गुरु वह है जो प्रथम अपना समर्पण का भाव शिष्य में स्थापित करता है।
  शिष्य का सद्‌गुरु के प्रति समर्पण तो केवल उस क्रिया की प्रतिक्रिया ही है।
- ❖ एक बार आपको यह ज्ञान हो गया कि परमात्मा मेरे ही भीतर बैठा हुआ है, तो फिर सारा ज्ञान आपको आपके भीतर से ही प्राप्त होना शुरु हो जाएगा। परमात्मा की अनुभूति अपने-आप होने लग जाएगी।
- ❖ जब तक यह भीतर का मार्ग बतानेवाला कोई मार्गदर्शक जीवन में नही आता, तब तक, हमारे भीतर भी मार्ग है और उस पर चलना है, इसका मनुष्य को पता भी नहीं चलता।
- ❖ जीवंत सद्‌गुरु यह अनुभूति कराता नहीं है, पर जीवंत सद्‌गुरु के बिना यह संभव भी नहीं है। यह अनुभूति जीवंत सद्‌गुरु के सान्निध्य में हो जाती है।

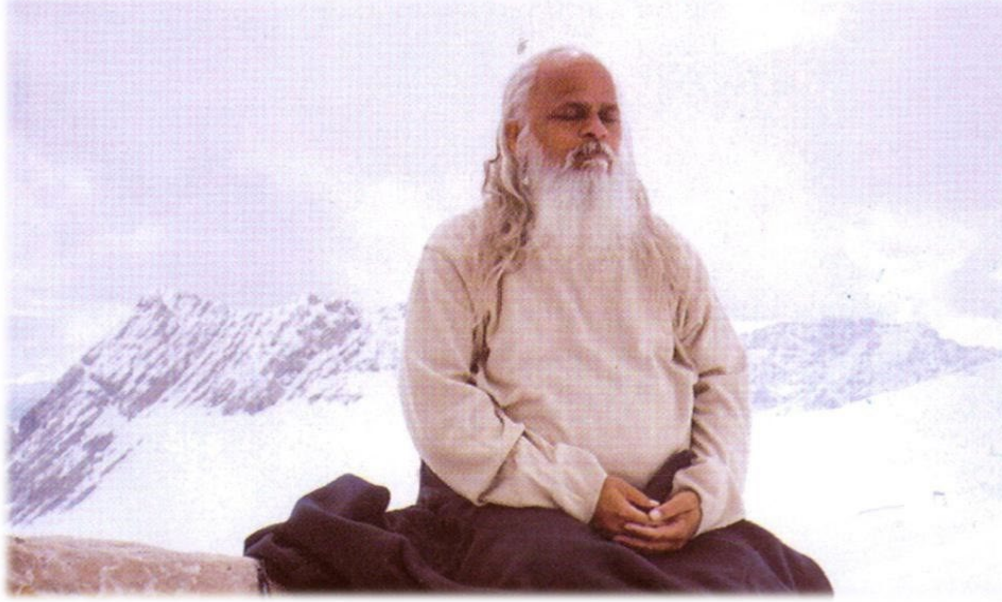

जीवंत सद्‌गुरु को पहचाने कैसे...?

- ❖ सद्‌गुरु तो आचरण से भी परे होते हैं। सद्‌गुरु को अच्छे आचरण से पहचाना नहीं जा सकता है। और न ही अच्छा आचरण रखकर वे समाज को प्रभावित करना चाहते हैं। प्रायः देखा गया है कि ये अपने दोषों को छुपाते नहीं है क्योंकि दोष छुपाना एक शरीर के स्तर का कार्य होता है और ये शरीर से परे होते हैं। ये उलटा अपने दोषों को और अधिक सामने रखते हैं ताकि लोग उनके दोषों को देखकर ही भाग जाएँ और उनके पास नहीं आएँ।
- ❖ इसी कारण दोषों की ओर ध्यान न देते हुए सद्‌गुरु को पहचानना बड़ा कठिन कार्य होता है। दोषों के पार देख पाना संपूर्ण समर्पण से ही संभव है। क्योंकि जहाँ शरीर आया वहाँ दोष आएँगे ही।
- ❖ गुरु का शरीर भी सामान्य मनुष्य जैसा ही होता है। पर गुरु का शरीर आत्मतत्त्व के प्रभाव में होता है और इसीलिए उसमें एक प्रकार का जबरदस्त आकर्षण होता है। यह आकर्षण भी दिखता नहीं है, अनुभव होता है। इसीलिए जीवंत गुरु को पहचानना अत्यंत कठिन है और जीवंत गुरु अनुभूति से ही पहचाने जा सकते हैं।

किसी भी जीवंत,शरीरधारी सद्‌गुरु से मिलेंगे तो हमें उस शरीर के दोषों के परे भीतर से बहने वाले चैतन्य से जुड़ना होगा।
तभी गुरुतत्त्व तक पहुँच सकते हो।

❖ ये माध्यम को जानना, ये माध्यम को पहचानना, ये माध्यम को अनुभव करना जितना आज आसान है ना, उतना आज के पहले कभी भी नहीं था। संत कबीर के दफे उनको जान सके उनको पहचान सके ऐसा कोई मापदंड समाज के पास था क्या? नहीं था। संत ज्ञानेश्वर हो गए उनको जान सके, उनको पहचान सके ऐसा कोई मापदंड समाज के पास था क्या? नहीं था। शिर्डी के साईबाबा, माने अभी.. क्या बोलते हैं ना, सौ-डेढ़ सौ साल पुरानी बात है। तो उनके जीवनकाल में उनको जान सके, उनको पहचान सके ऐसा कोई तरीका था क्या? नहीं था कि वास्तव में ये आदमी का देहभाव छूट गया है।

❖ आज ऑरा के कारण, आज आभामण्डल के कारण ये संभव है, आप पहचान सकते हो, आप जान सकते हो। इसलिए मैंने कहा ना, दो माध्यम हैं। या तो किसी समाधि स्थल के माध्यम से आप जाओ, उसकी प्रार्थना से जाओ, समाधिस्थ गुरु के माध्यम से जाओ या ऑरा चेक करके जाओ। ये ऑरा की मशिनें तब नहीं थी ना,

❖ **ऑरा के माध्यम के द्वारा आप जान सकते हैं ये मनुष्य देहभाव से परे है, ये माध्यम शुद्ध है, ये माध्यम पवित्र है।**

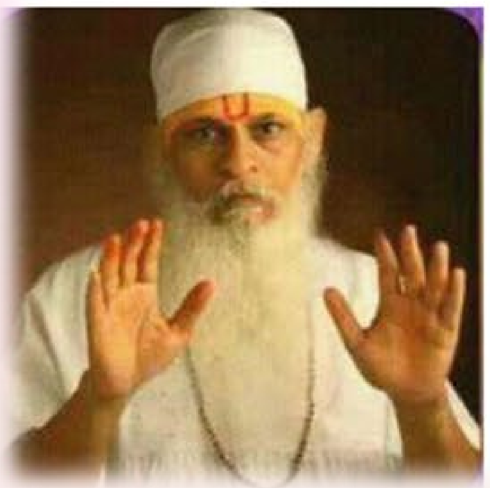

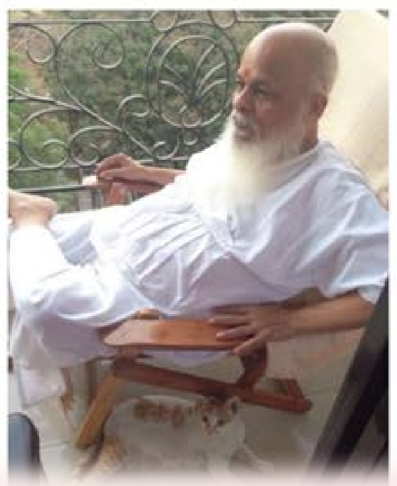
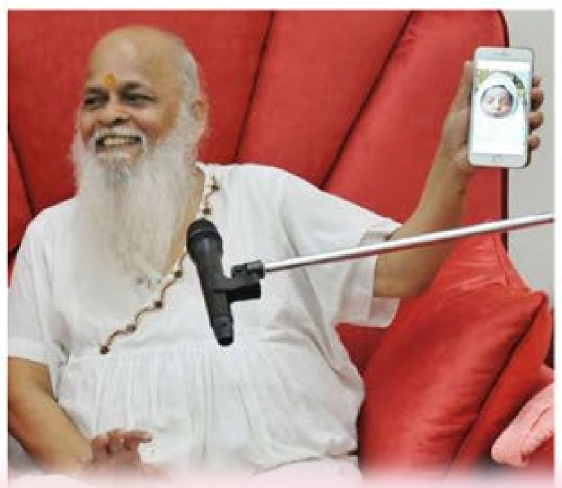

जीवंत सद्गुरु के सान्निध्य में अनुभूति

❖ गुरु आपको कैसा दिख रहा है, वह क्या कर रहा है, वह क्या बोल रहा है, इनसे अधिक महत्त्वपूर्ण है - क्या अनुभव हो रहा है।

❖ सबसे पहली अनुभूति - उसके सान्निध्य में अच्छा लगता है। इस जीवन के मरुस्थल में मानो ठंडे पानी का कोई झरना मिल गया हो, ऐसा अनुभव होता है। गुरु के करीब अनायास ही चले जाते हैं, पर उससे दूर होने की इच्छा नहीं होती है।

❖ सारे विचार बंद हो जाते हैं, गुरु की एक झलक से भी मनुष्य की आत्मा पुलकित हो जाती है। और उस आनंदित आत्मा का आनंद सारे शरीर पर प्रभाव डालता है।

❖ मनुष्य के शरीर में स्पंदन होने लगते हैं। और ये स्पंदन मनुष्य के पंजों और तलुवों पर अधिक महसूस होते हैं क्योंकि मनुष्य के शरीर में ये अंग अधिक संवेदनशील होते हैं।

❖ आत्मा का यह आनंद स्पंदन के रूप में शरीर पर अनुभव होने लगता है। और यह अनुभव शरीर के लिए पहला अनुभव होता है क्योंकि आत्मा पहले कभी इस प्रकार से आनंदित नहीं हुई थी। यह आत्मा आनंदित इसलिए हो जाती है क्योंकि आत्मा परमात्मा को जानती है। परमात्मा से हमारा आशय लाखों पवित्र आत्माओं के समूह से है। इन लाखों आत्माओं की सामूहिक शक्ति गुरु की आत्मा के साथ होती है। एक आत्मा लाखों आत्माओं के समूह की ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित होगी।

❖ लाखों आत्माओं की सामूहिकता के कारण एक ब्रह्मनाद का निर्माण हो जाता है। गुरु के सान्निध्य में जाने के बाद यह ब्रह्मनाद सुनाई पड़ना प्रारंभ हो जाता है।

एकलव्य की कहानी से सीख:

- गुरु क्या है? शिष्य क्या है? शिष्य और गुरु का संबंध क्या है? दोनों के बीच में शरीर माध्यम नहीं रहता है।
- माध्यम रहता है, 'भाव'। संपूर्ण भाव से देखेगा तो गुरु चाहे न चाहे गुरु के भीतर का ज्ञान वो संपूर्ण ग्रहण कर सकता है।

❖ गुरु अलग है और गुरुतत्त्व अलग है। वो (एकलव्य) गुरुतत्त्व के सामने झुका था। उसने गुरुतत्त्व से ग्रहण किया था और गुरुतत्त्व पे गुरु का कोई नियंत्रण नहीं होता।

❖ हमको केवल वो ही ज्ञान मालूम है जो ज्ञान एक शिक्षक एक विद्यार्थी को सिखा सकता है, एक विद्यार्थी अपने शिक्षक से सीख सकता है; लेकिन ये दोनों ज्ञान शरीर के हैं जो सिखा सकते हैं और सीख सकते हैं। मैं जिस ज्ञान की बात कर रहा हूँ वो ज्ञान आत्मा का ज्ञान है। उसको कोई सिखा नहीं सकता; कोई सीख नहीं सकता। उसके ऊपर गुरु का कोई अधिकार नहीं है।

❖ गुरु अलग है गुरुकृपा अलग है। गुरुकृपा का संबंध आत्मा के साथ है। आप उस गुरु को कितना मानते हो?

❖ कितनी तुम्हारी गुणग्राहकता है उसके ऊपर उसके अंदर का ज्ञान, उसके अंदर का नॉलेज आपको ट्रान्सफर होगा।

अनुभूति ही श्रद्धा का आधार

❖ यह सब अनुभव तभी हो सकता है जब आप में झुकने की स्थिति हो क्योंकि झुकने की स्थिति ग्रहण करने की क्षमता को बढ़ाती है।

❖ न आपका शरीर झुके और न शरीर के सामने झुके; आपकी आत्मा झुकनी चाहिए और आत्माओं के समूह के सामने झुकनी चाहिए। एक आत्मा का आत्माओं के समूह के सामने झुकना, यह उस आत्मा की श्रद्धा के बिना कैसे हो सकता है? इसीलिए गुरु के प्रति श्रद्धा अत्यंत आवश्यक होती है और श्रद्धा अंधश्रद्धा नहीं होनी चाहिए।

❖ दूसरे लोग किसी पर श्रद्धा कर रहे हैं और हम भी उनकी देखा-देखी श्रद्धा करें, तो यह श्रद्धा नाटकीय होगी, अंधश्रद्धा होगी क्योंकि हमें कोई अनुभूति नहीं है, फिर भी हम श्रद्धा कर रहे हैं। ऐसी श्रद्धा अधिक समय तक नहीं बनी रह सकती।

❖ इसीलिए, अनुभूति होने पर जो श्रद्धा होती है, वह शाश्वत श्रद्धा होती है। श्रद्धा आत्मा का पवित्र भाव है। वह आत्मा को आत्मा की अनुभूति आने पर ही होना चाहिए। इसीलिए अनुभूति ही श्रद्धा का आधार होना चाहिए।

आभामंडल (ऑरा)

❖ आपके पास पैसा नहीं है तो उधार पैसा लेकर 'मैं पैसे वाला हूँ', यह नाटक कर सकते हैं।

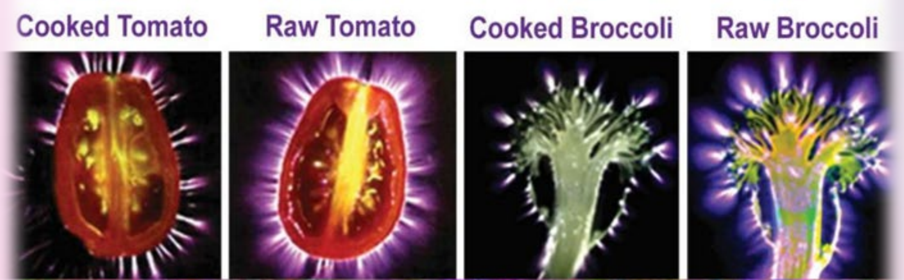

❖ आप स्वयम् ज्ञानी नहीं हैं तो किसी भी विषय की जानकारी लेकर 'आप ज्ञानी हैं' यह नाटक कर सकते हो।

❖ लेकिन केवल और केवल 'आध्यात्मिक स्थिति' ही ऐसी है जिसका नाटक नहीं किया जा सकता है। आधुनिक समय में ऐसी मशीने आ गयी हैं जिससे मनुष्य की आध्यात्मिक स्थिति को जाना जा सकता है। आज यह इतना आसान हो गया है। फिर भी आज मनुष्य इस आभामंडल को , ऑरा को जानता तक नहीं है। इस विषय पर कोई बात भी नहीं करता। इस विषय पर जनजागृति की आवश्यकता है।

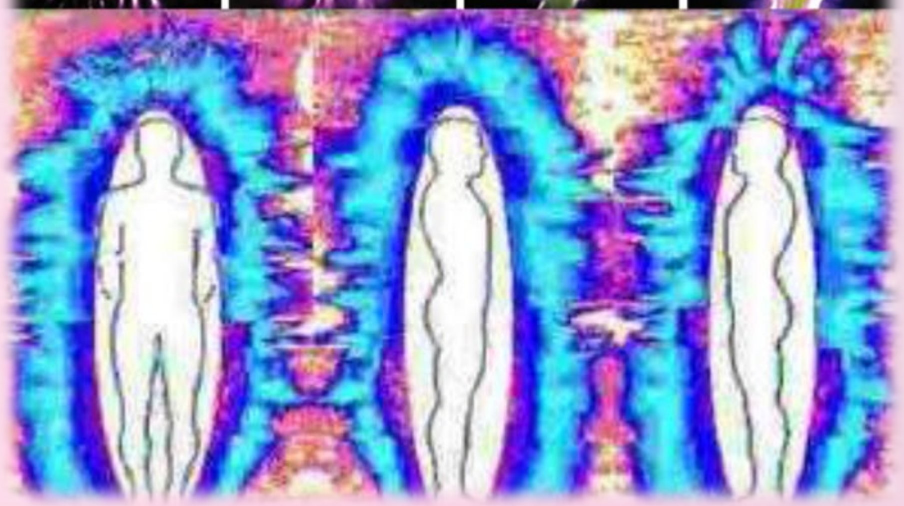

❖ इस बात की आवश्यकता आज जितनी है उतनी पहले कभी नहीं थी। क्योंकि बिना इस आभामंडल के ज्ञान के आध्यात्मिक क्षेत्र में आना उचित प्रतीत नहीं होता।

❖ कहते हैं कि पानी पीयो छानकर और गुरु करो जानकर। 'ऑरा' अर्थात् आभामंडल से गुरु की आध्यात्मिक स्थिति को जाना जा सकता है।

समर्पण यानी क्या...?

❖ समर्पण शब्द में ही सबकुछ आ गया है, पर समर्पण शब्द का अर्थ लोग ठीक से नहीं समझ पाते हैं।
❖ अर्पण यानी आपके पास जो कुछ अच्छा है, उसमें से कुछ अर्पण करना, वह भी अच्छे भाव के साथ।
❖ और समर्पण का अर्थ है - आपके पास जो कुछ है, वह सब ही समर्पित कर देना!

❖ लोग, सब समर्पित कर देना यानी सब धन-संपत्ति दे देना, सारा शरीर कार्य के लिए दे देना या
गुरु के कार्य जीवनभर करने का प्रण कर लेना - इस प्रकार के अर्थ लगाते हैं। इस प्रकार के अर्थ गलत हैं।
❖ गुरु शब्द आत्मिक स्तर का है और धन-संपत्ति भौतिक स्तर की होती है।
यानी धन-संपत्ति का समर्पण से कोई संबंध नहीं है। शरीर से जीवनभर गुरु का कार्य करना या शरीर ही गुरु के कार्य में सौंपना भी समर्पण नहीं है क्योंकि गुरु शब्द आत्मिक स्तर का है ओर आप शरीर सौंपने की बात कर रहे हैं।
❖ समर्पण शब्द आत्मिक है, गुरु शब्द आत्मिक है तो किए जानेवाले समर्पण का भाव भी आत्मिक ही होना चाहिए।
❖ समर्पण शब्द का अर्थ - अपने-आपको शारीरिक रूप से संपूर्ण नष्ट कर आत्मिक रूप से अपने गुरु की
आत्मिक शक्तियों में समाहित हो जाना है।

❖ जहाँ आप झुके कि उसका रास्ता बन गया। फिर आप चाहें, न चाहें, आप पर चैतन्यरूपी अमृत बस बरसता ही जाएगा। गुरु की आत्मा के सामने झुके बिना गुरु स्वयं शरीर से कुछ भी नहीं दे सकते हैं।
गुरु स्वयं कुछ दे नहीं सकते, गुरु से लेना पड़ता है; झुककर। जिसे झुकना आ गया, वह खुद ही पा लेगा।

जीवन में सुख मिला, प्रभु तेरी कृपा से मिला है, स्वीकार है। जीवन में दु:ख मिला, वह स्वीकार है। प्रभु, तेरी जैसी इच्छा!

साधक के तीन प्रकार

१) पहला साधक रोगी साधक होता है।
इसे शरीर की अनेक बीमारियाँ रहती हैं और इसका चित्त सदैव अपनी बीमारियों पर ही होता है। और बीमारियों में सदैव चित्त रखने से इसका चित्त भी बीमार व अस्वस्थ होता है। यह नहीं जानता - बीमारियाँ शरीर की है, वह तो आत्मा है।

२) दूसरा साधक भोगी साधक होता है।
इसका चित्त भोग-विलास में होता है। यह प्रायः अतृप्त देखा गया है। इसे शरीर की कोई बीमारी नहीं होती, पर मन की अतृप्ति होती है। इसका मन सदैव किसी-ना-किसी लालसा में लिप्त रहता है। इसका चित्त कबी कामवासना में लिप्त रहता है तो कभी भौतिक साधनो में। यह सदैव शरीर को कष्ट दिए बिना आध्यात्मिक प्रगति चाहता है, पर वह साधना तो अपनी इच्छाओं की, अपने भोगविलास की करते रहता है। वह यह नहीं जानता - भौतिक साधन शरीर को सुख दे सकते हैं, पर वह सुख शाश्वत न होगा। वह थोड़े समय का अस्थाई सुख होता है।

३) तीसरा साधक योगी साधक होता है।
यह शरीर-सुखों के अधीन नहीं होता। शरीर के सुख मिले तो ठीक, नहीं मिले तो भी ठीक। यह जानता है - शाश्वत सुख आत्मा का सुख है। इसलिए यह जीवन में आत्मा के शाश्वत सुख की खोज में रहता है जो सुख पाने के बाद जीवन में कोई सुख की कामना ही नहीं रहती है। यह अपनी ही मस्ती में, रहता है क्योंकि यह आत्मा के सुख भोगते रहता है। यह साधक आदर्श साधक है। यह साधक पूर्ण समर्पित साधक है।
जीवन में कुछ मिला तो भी गुरुकृपा से, न मिला तो भी गुरुकृपा से। वह सभी परिस्थितियों को साक्षीभाव से देखता है। ऐसा साधक अपने सद्गुरु के चैतन्य से जुड़ा रहता है। और ऐसे साधक सदैव सद्गुरु का संरक्षण प्राप्त किए रहते हैं।

संकट बने सेतु

- ❖ हमको कोई भी दर्द का एहसास होता है, कोई भी समस्या का एहसास होता है, किसी भी समस्या पे हम खूब देर तक विचार करते रहते हैं या किसी समस्या पे हम खूब चिंतित होते हैं। ये सारे लक्षण हैं कि हमारे अंदर शरीर की प्रधानता है।
- ❖ मानवसमाज में आए प्रत्येक गुरु को एक ही अनुभव आया है कि मनुष्य अपनी समस्याओं के कारण गुरु की शरण में आता है, अपने जीवन के संकट के कारण गुरु की शरण में आता है। और गुरु जानते हैं कि यह संकट निमित्त है, उसे उसके पास लाने के लिए, वास्तव में शिष्य का आत्मोत्थान का ही समय आ गया है।
- ❖ फिर गुरु सान्निध्य में, शिष्य का चित्त समस्या से हटकर कब परमात्मा की ओर चला जाता है, यह शिष्य को पता नहीं चलता है। शिष्य के जीवन में आए संकट ही सेतु बन जाते हैं, भवसागर को पार करने के लिए। इसलिए मनुष्य को जीवन में आए संकटों से घबराना नहीं चाहिए। उन संकटों को प्रसाद समझकर ग्रहण करना चाहिए।
- ❖ जितनी भी जिवन की समस्या है, समस्याओं का संबंध ही शरीर से है। आत्मा को कोई प्रॉब्लम नहीं है।
- ❖ जितना आत्मा के करीब जाओगे, आपके भीतर का आत्मभाव बढ़ते जाएगा। ये संबंध आपके अंतिम सांस तक काम आएगा।

आत्मसाक्षात्कार क्या है...?

- ❖ आत्मसाक्षात्कार तो बीज जैसा है। बिना बीज के वृक्ष का निर्माण संभव नहीं है और बिना देखरेख के भी वृक्ष का निर्माण संभव नहीं है।
- ❖ आत्मसाक्षात्कार तो केवल अपने आत्मा के साथ परिचय होना मात्र है, पर नियमित ध्यान करके ही इस परिचय को संबंध में स्थापित करना होता है। आपका संबंध जैसे जैसे गहरा होता चला जाएगा, वैसे-वैसे आत्मा का आधिपत्य आप पर होना शुरु हो जाएगा।

- ❖ आत्मसाक्षात्कार जीवन का मैनेजमेन्ट करता है। जो योग्य है, वही होने देता है। जिसे आवश्यक नहीं समझता, नहीं होने देता है।
- ❖ आत्मसाक्षात्कार के बाद आत्मा का दिया प्रकाशित हो जाता है और उसके प्रकाश में चारों ओर उजाला ही उजाला हो जाता है और अँधेरा दूर हो जाता है। अगर अपने आसपास का अँधेरा हटाना है तो स्वयं को प्रकाशित करना होगा।
- ❖ और अपने-आपको प्रकाशित कर सको, इतना ही जीवन है।
- ❖ इसीलिए इस छोटे से जीवन को यह देखने में मत गँवाओ कि इस दुनिया में अँधेरा कहाँ तक है, बस अपना दिया जला लो।

❖ आत्मसाक्षात्कार किया नहीं जाता क्योंकि यह ईश्वरीय क्रिया है। यह कोई कर ही नहीं सकता, यह हो जाती है।

❖ एक आत्मसाक्षात्कारी सद्गुरु के सान्निध्य में यह क्रिया स्वयं ही घटित हो जाती है। आत्मसाक्षात्कार भी प्राप्त होता है, आपकी शुद्ध इच्छा के कारण। क्योंकि प्रथम आप इच्छा करते हो, फिर आपका चित्त उस पर जाता है और फिर आप किन्हीं आत्मसाक्षात्कारी सद्गुरु के सान्निध्य में जाते हो और उनके सान्निध्यमात्र से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है।

❖ यह ठीक ऐसा ही है जैसे कि जलते हुए दीपक की लौ से बुझे हुए दीपक की बत्ती टकरा जाए और बुझा हुआ दीपक जल उठे। तो जलता हुआ दीपक बुझे हुए दीपक को जलाता नहीं है, वह तो अपने ही जगह स्थित होकर जलता रहता है, बल्कि बुझा हुआ दीपक उसके पास जाकर जल उठता है।

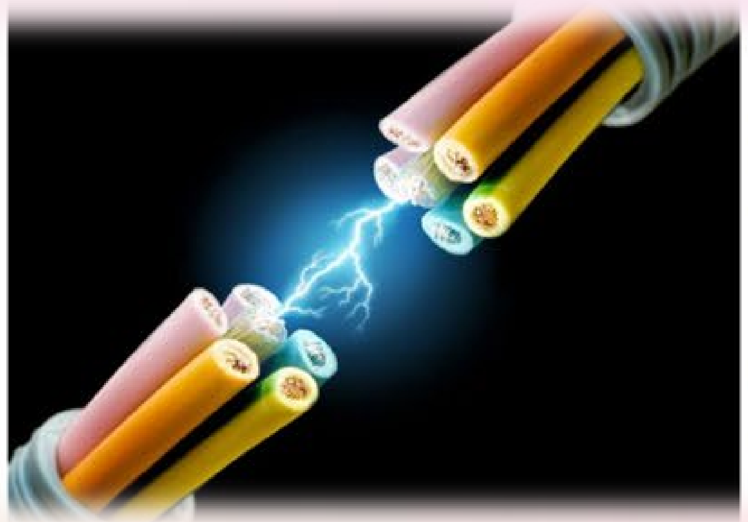

आत्मा का क्रमिक विकास

१) भगवान के बहुत से स्वरूपों को मानना और बहुत से स्वरूपों की पूजा करना, यह पहली पादान है। पर इसमें चित्त विभक्त होता है और चित्त कमजोर हो जाता है। और इसी कारण भगवान के बहुत से स्वरूपों को माननेवालों में आत्मविश्वास नहीं होता है। वे भगवान के बहुत से स्वरूपों पर विश्वास करके वास्तव में किसी पर भी विश्वास नहीं करते हैं। उनका अपने उपर भी विश्वास नहीं होता है। इसी कारण जीवन की छोटी बातों से भी वे विचलित हो जाते हैं। ये लोग भगवान को तो मानते हैं, पर अनेक रूपो में मानते हैं।

२) दूसरे, अगली पादान के वे लोग होते हैं जिनका एक ही भगवान होता है। वे भी भगवान के सब स्वरूपों का सम्मान करते हैं पर हृदय से एक ही को मानते हैं। ये भगवान के उस एक ही स्वरूप को पूर्ण समर्पित रहते हैं। वे केवल उसी के उत्सव मनाते हैं, उसी की जयंती मनाते हैं, उसी के मंदिर में जाते हैं,उस एक ही माध्यम की नियमित रूप से आराधना करते हैं। ये अपने-आपको भी एक ही भगवान का भक्त कहलाना पसंद करते हैं। उनके जीवन में कभी उतार-चढ़ाव आए, तो भी वे स्थिर रहते हैं। जो उनके जीवन में अच्छा हो रहा है या बुरा भी हो रहा है,वह उनकी इच्छा से हो रहा है, ऐसा मानते हैं। यह देवता के एक ही स्वरूप को मानना उन को एक नया विश्वास दिलाता है।

३) इसके भी आगे की आध्यात्मिक पादान है - किसी समाधिस्थ गुरु को मानना। प्रायः यह देखा गया है कि समाधिस्थ गुरु का जीवन सामान्य ही रहता है और इसी कारण उनके जीवनकाल में बहुत ही विरले लोग उन्हें जान पाते हैं। और जो जान पाते हैं, उनमें बहुत कम ही उन्हें मान पाते हैं। पर इनके समाधिस्थ होने के बाद लोग उन्हें मानना प्रारंभ कर देते हैं। उनकी अपनी कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं होती है। वे तो ईश्वरीय कार्य के माध्यम होते हैं। पर देह का त्याग करने के बाद उनकी आत्मा मुक्त हो जाती है और कार्य का विस्तार होने लग जाता है और फिर उन्हें जाननेवाले, उन्हें माननेवाले अचानक ही बढ़ जाते हैं।

- शिष्य अगर आत्म-अनुभूति की शुद्ध इच्छा करें, तो वह आत्म-अनुभूति का मार्ग बता सकता है। समाधिस्थ गुरु का यही एकमात्र उद्देश होता है कि शिष्य आत्म-अनुभूति की इच्छा करे और उसे वह उस मार्ग को बता सके।

यह बात अवश्य है कि समाधिस्थ गुरु विश्व का वह एकमात्र वर्तमानकाल का माध्यम है जो स्वयं भूतकाल का होने पर भी शिष्य को आज के माध्यम के साथ जोड़ता है। या यह कहा जा सकता है कि परमात्मा के आज के, वर्तमान के स्वरूप तक इस समाधिस्थ गुरु के माध्यम से पहुँचा जा सकता है।
समाधिस्थ गुरु आपकी प्रार्थना सुनता है और आपकी मन्नत पूर्ण करता है। और वह आपको संकेत देता है - अनुभव कर, यहाँ तेरी मन्नत पूर्ण हो सकती है। तू वह माँग जो माँगने के बाद माँगने को कुछ बाकी न रह जाए। हम हमारी समस्याओं में इतने लिप्त रहते हैं कि आध्यात्मिक प्रगति की माँग को भूल जाते हैं, आत्मा की अनुभूति को भूल ही जाते हैं। कौन मेरा संपूर्ण गुरु, कहाँ जाकर मेरी खोज समाप्त हो जाएगी, इसका उत्तर समाधिस्थ गुरु ही दे सकता है। बस, आपको उसके पास जाकर पूछना होगा।
समाधिस्थ गुरु के सान्निध्य में सद्गुण विकसित होते हैं।

४)	इसके आगे की पादान है - जीवंत सद्गुरु को मानना।
सबसे आसान इसलिए है क्योंकि परमात्मा के इस माध्यम के पास आसानी से पहुँचा जा सकता है और कठिन पादान भी है क्योंकि अपने ही जैसा सामान्य शरीर दिख रहा है, फिर उस शरीर के आवरण के भीतर झाँकना होता है।

हमने सदियों से यह मान रखा है कि परमात्मा यानी वह जो वर्तमान में नहीं है, भूतकाल में ही है। यह केवल हमने मानकर रखा है जबकि वह वर्तमान में तो होता ही है।
जब यह दुनिया आज भी विद्यमान है, हम आज भी इस दुनिया में साँस ले रहे हैं, तो परमात्मा की शक्ति इस संसार में किसी-ना-किसी माध्यम में तो होगी ही। और वह माध्यम भी होगा ही जिस माध्यम से विश्वचेतना बह रही होगी।

ये माध्यम होते हैं। इनका अपना अलग से कोई अस्तित्व नहीं होता है। अपना अलग अस्तित्व नहीं होने के कारण ही उनके माध्यम से हमें किसी भी महापुरुष के, किसी भी देवता के, किसी भी समाधिस्थ गुरु के दर्शन होते हैं।

जीवंत सद्गुरु का अपना, शरीर का कोई अलग अस्तित्व नहीं होता है। वे तो एक निखालस, खाली पाईप के समान होते हैं जिसमें से परमात्मा एक प्रवाह के रूप में प्रकट होता ही रहता है।

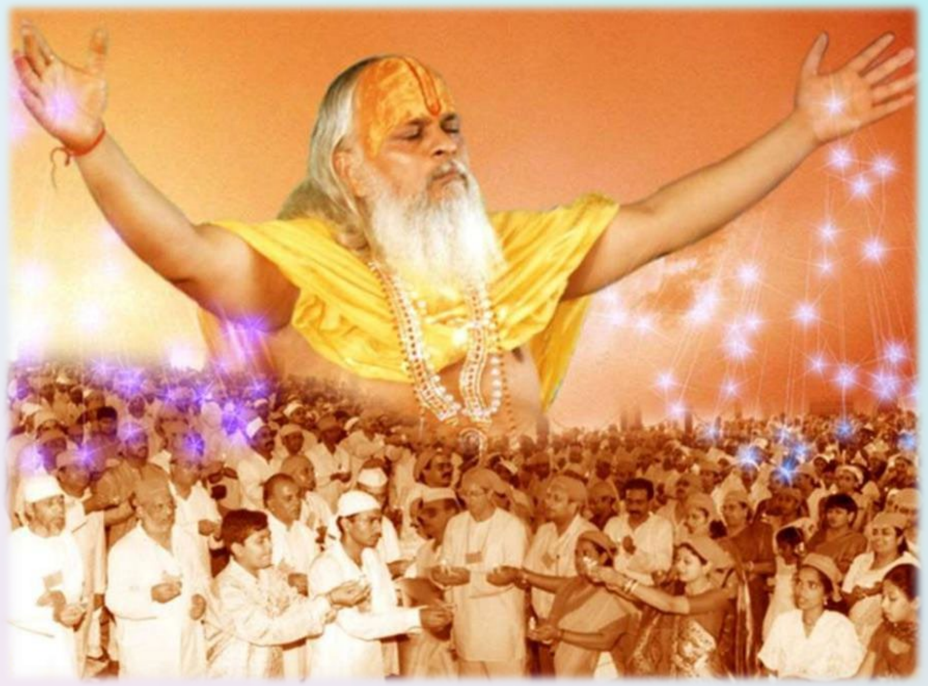

५)	इसके उपर की पादान है कि आप स्वयं ही अपने गुरु हो जाओ और आपका सारा मार्गदर्शन आपकी आत्मा करने लग जाए। यह स्थिति सर्वोत्तम स्थिति है, सर्वोच्च स्थिति है। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह सबसे अंतिम स्थिति है। यह स्थिति एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है। यह प्राप्त होने के बाद उसकी परमात्मा की बाहरी खोज समाप्त हो जाती है। वह अपने ही भीतर परमात्मा के दर्शन करता है।

परमात्मा आत्मा के रूप में प्रत्येक शरीर में होता है, बस जागृत नहीं होता। इस व्यक्ति में जागृत स्वरूप में होता है। फिर इसे सब ज्ञात हो जाता है - क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। ऐसा हो जाने पर वह अपने स्वयं के निर्णय स्वयं ही लेता है। वह व्यक्ति अनुभूति करता है कि उसने परमात्मा को पा लिया और एक प्रकार का समाधान उसे प्राप्त हो जाता है। यह समाधान ही उसमें एक आध्यात्मिक क्रांति लाता है और इस क्रांति के कारण ही उसकी आध्यात्मिक प्रगति होती है।

❖ सारी जीवनयात्रा ही ‘मैं’ से ‘वो’ तक की है। एकबार वो का जीवन में प्रवेश हो जाए, जीवन आनंदमय हो जाता है।

गुरु पारस को अन्तरो , जानत है सब संत।
वह लोहा कंचन करे , ये करी लाये महंत।।

गुरु में और पारस पत्थर में अंतर है। यह सब संत जानते हैं। पारस तो लोहे को सोना ही बनाता है, परंतु गुरु शिष्य को अपने समान बनाता है।

समाधि-स्थल

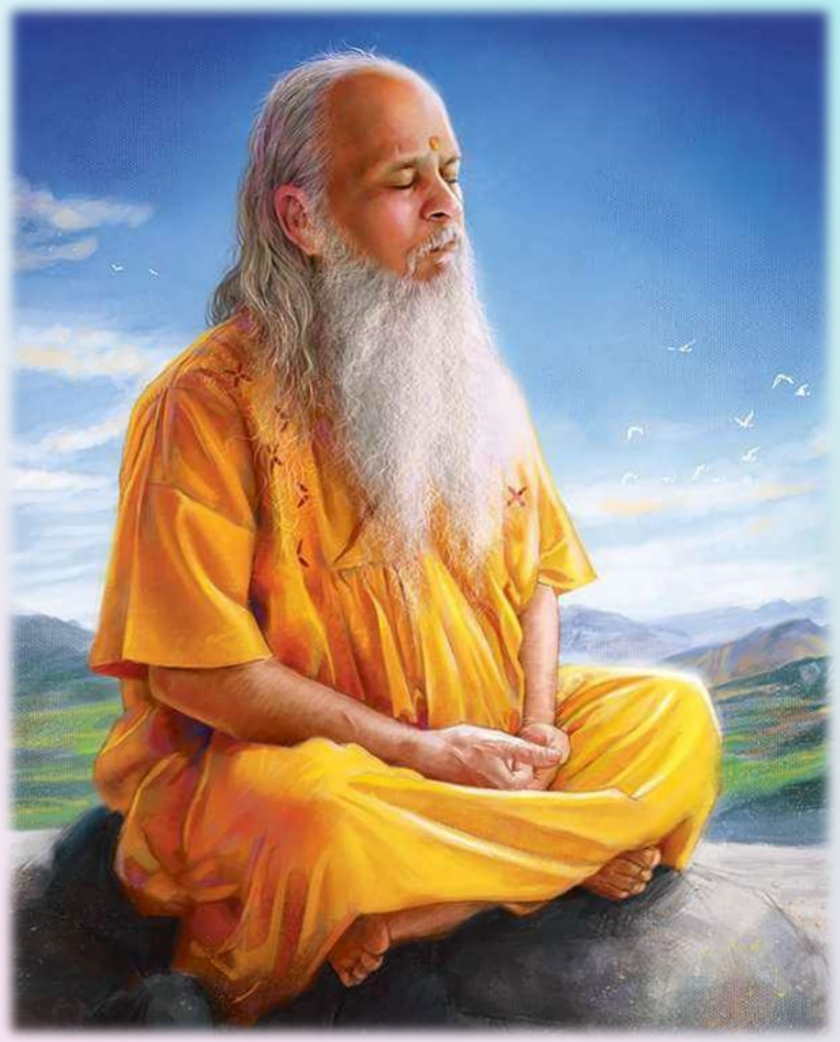

समाधि का आभामंडल सद्गुरु की संकल्पशक्ति के कारण सालों तक बना रहता है।
हम समाधि के सान्निध्य में जाकर इसीलिए आत्मशांति का अनुभव करते हैं क्योंकि समाधि के आसपास चैतन्य होता है। सद्गुरु का समाधि-स्थल वह दिवा-दांडी है जो भटकते हुए जहाजरुपी आत्माओं को सही दिशा का संकेत आनेवाले युगों-युगों तक देते रहता है।

वह अपने स्थान-विशेष पर स्थित होता है, पर उसका आभामंडल कई मीलों तक अनुभव होता है। और वह
अपनी सूक्ष्म शक्तियों से सर्वत्र होता ही है।
यह समाधि-स्थल निराश लोगों में आशा की नई किरण जगाता है,
तो अशांत मन को शांति प्रदान करता है।
तो एक ओर भौतिक सुखों में लिप्त लोगों को जगाता है और जीवन का उद्देश्य बताता है।

सद्गुरु अपने जीवन में सबकुछ बाँटता ही रहा है। इसीलिए उसके समाधि-स्थल पर जाने के बाद कुछ बाँटने का भाव, कुछ सेवा का भाव आ जाता है।

सद्गुरु और समाजसेवा

कई लोगों को अपने सद्गुरु के माध्यम से समाजसेवा की प्रेरणा मिली है। सद्गुरु ने कई समाजसेवी निर्माण किए हैं, पर स्वयं सद्गुरु समाजसेवा नहीं करता है। क्योंकि वह जो मानवसेवा करता है, वह आत्मीय होती है। उसे केवल आत्मा से अनुभव किया जा सकता है।

इसलिए हमें आध्यात्मिकता को समझना होगा। आध्यात्मिकता समाजसेवा की प्रेरणास्रोत होती है। आध्यात्मिकता में आने के बाद मनुष्य केवल अपने बारे में नहीं सोचता। उसका चित्त विशाल हो जाता है और अन्य लोगों की भलाई के बारे में सोचता है। फिर एक आध्यात्मिक व्यक्ति से समाजसेवा अनायास ही हो जाती है और उसमें कर्ता का भाव भी नहीं होता है। एक समाधि-स्थल तो एक विश्वविद्यालय जैसा होता है जो पवित्र आत्माओंरुपी विद्यार्थियों का निर्माण करता है जिनसे समाजसेवा ऐसे ही घटित हो जाती है।

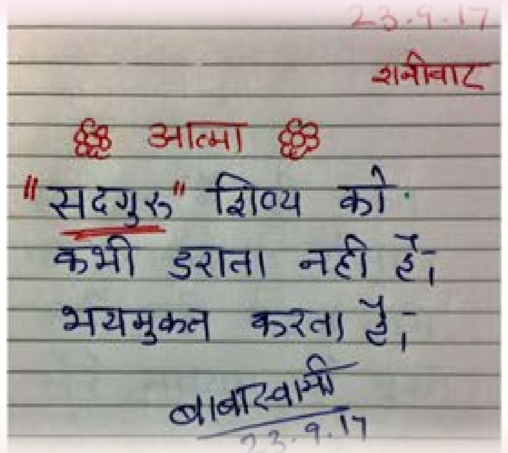

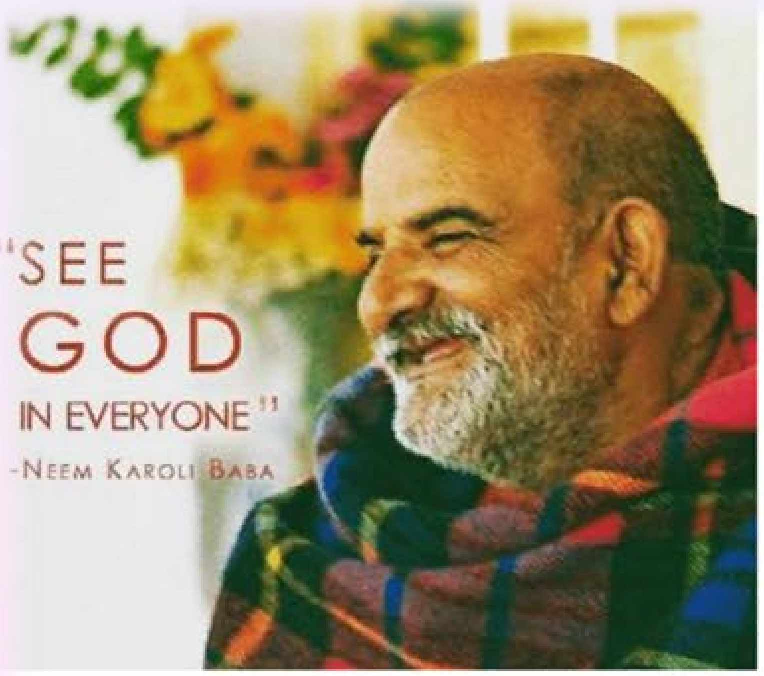
"SEE
GOD
IN EVERYONE"
-NEEM KAROLI BABA

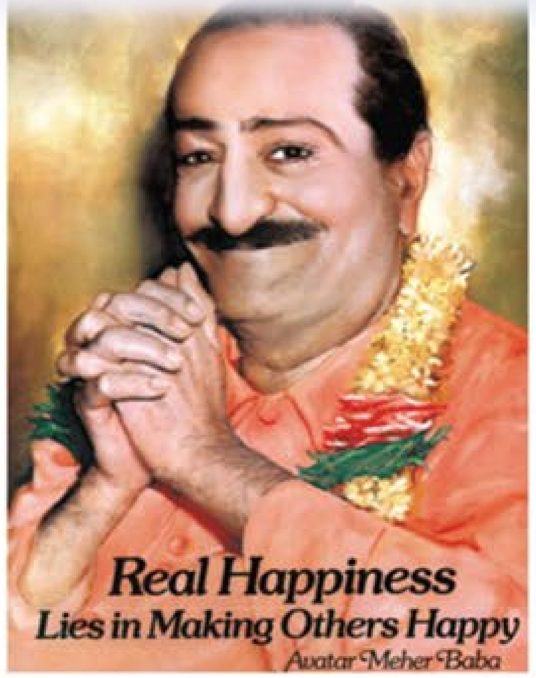
Real Happiness
Lies in Making Others Happy
Avatar Meher Baba

Your own Self-Realization is the greatest service you can render the world.
-Shri Ramana Maharshi

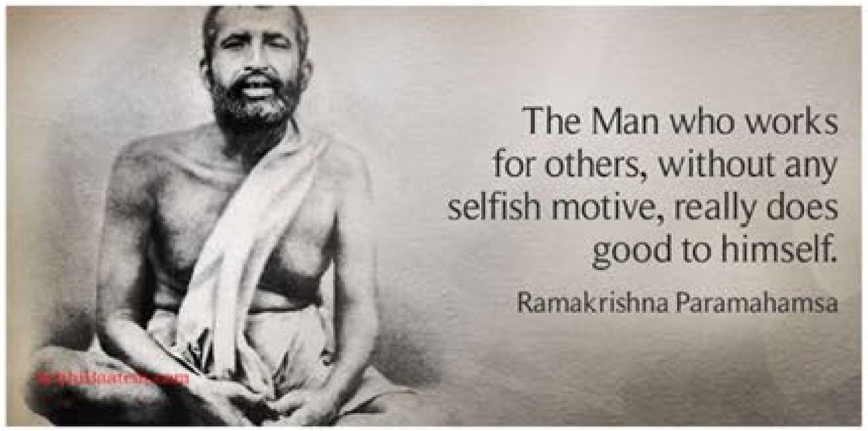
The Man who works for others, without any selfish motive, really does good to himself.
Ramakrishna Paramahamsa

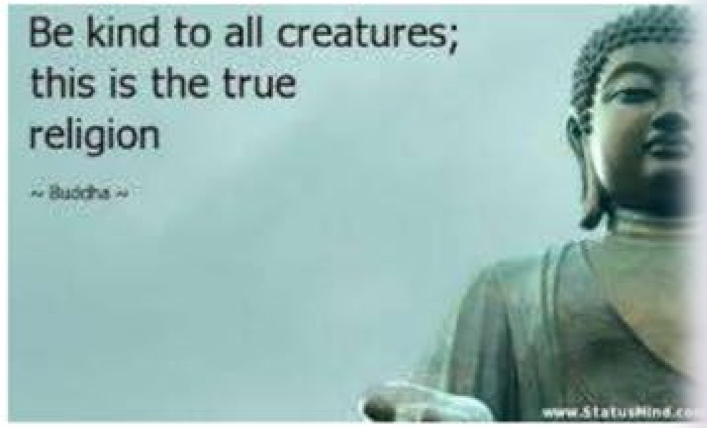
Be kind to all creatures; this is the true religion
~ Buddha ~

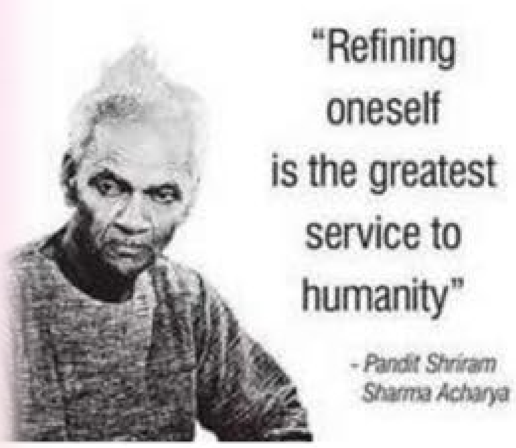
"Refining oneself is the greatest service to humanity"
- Pandit Shriram Sharma Acharya

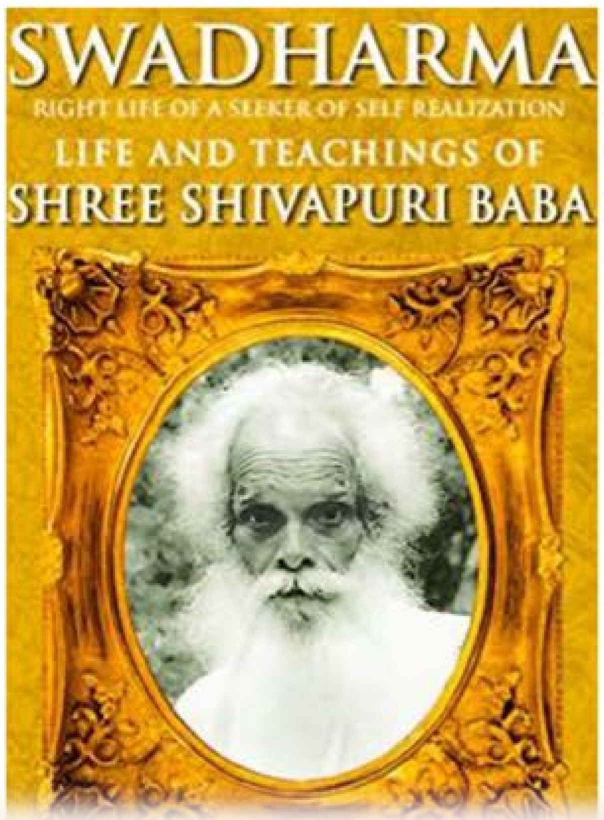
SWADHARMA
RIGHT LIFE OF A SEEKER OF SELF REALIZATION
LIFE AND TEACHINGS OF
SHREE SHIVAPURI BABA

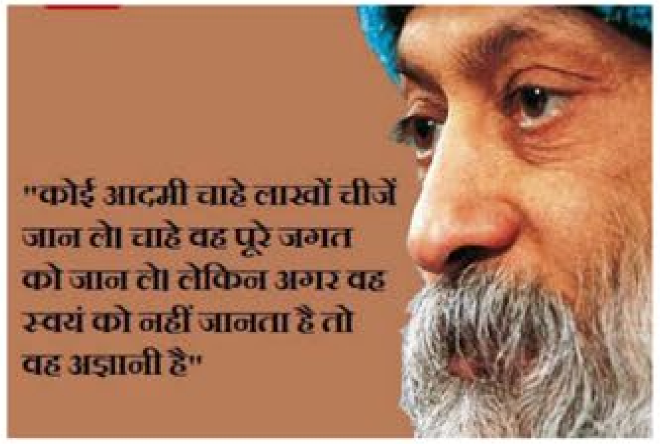
"कोई आदमी चाहे लाखों चीजें जान ले। चाहे वह पूरे जगत को जान ले। लेकिन अगर वह स्वयं को नहीं जानता है तो वह अज्ञानी है"

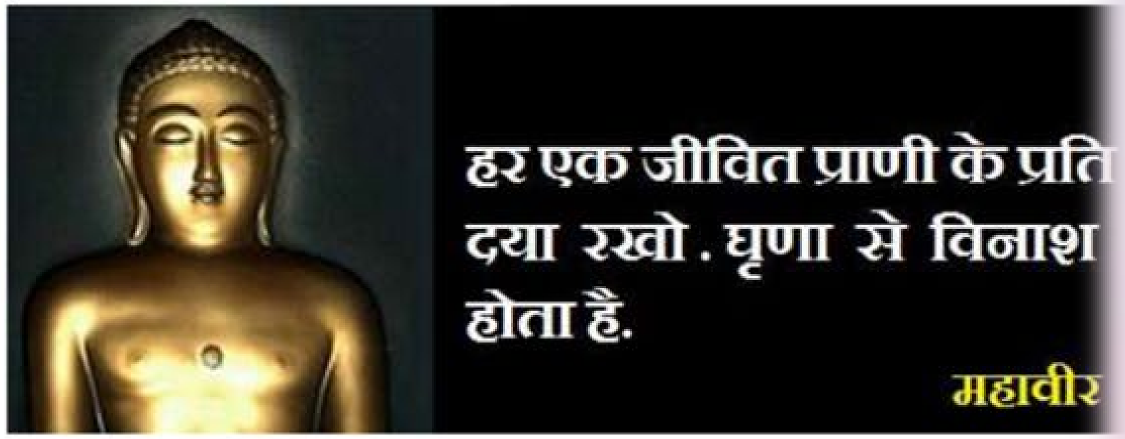
हर एक जीवित प्राणी के प्रति दया रखो. घृणा से विनाश होता है.
महावीर

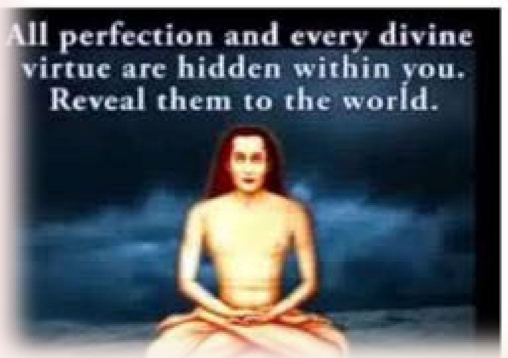
All perfection and every divine virtue are hidden within you. Reveal them to the world.

वसुधैव कुटुम्बकम
सारी दुनिया एक परिवार

परम पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी का परिचय

- ❖ परम पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामी वे भगीरथ हैं जो समर्पण ध्यान रूपी भागीरथी(गंगा), हिमालय की कंदराओं से समाज तक लाए। समर्पण ध्यान का ज्ञान हिमालय में ध्यान कर रहे मुनियों, तपस्वियों तथा कैवल्यकुंभक योगियों को ही था। स्वामीजी उन तक कैसे पहुँचे? यह जानने के लिए, आइए, स्वामीजी को उनके बचपन से जानें।
- ❖ स्वामीजी का जन्म एक निम्न मध्यमवर्गीय महाराष्ट्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। माता धार्मिक विचारोंवाली, सौम्य, शांत तथा मितभाषी महिला थीं। स्वामीजी को अपने नाना-नानी तथा माँ से धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए थे। किन्तु उन सबसे स्वामीजी की खोज भिन्न थी.. .. वे ईश्वर से मिलना चाहते थे.. .. उनकी अनुभूति करना चाहते थे।
- ❖ पिता की सीमित आय होने के कारण स्वामीजी ने मेट्रिक (एस.एस.सी.) से स्नातकोत्तर (वाणिज्य) तक की पढ़ाई का खर्च स्वयं वहन किया। वे अपने खाली समय में विद्यार्थियों को पढ़ाते। इससे जो आय होती उसीसे शिक्षा शुल्क (फीस) तथा शिक्षण सामग्री का खर्चा चलता था।
- ❖ बचपन से ही उन्हें घूमने का बहुत शौक था। बचपन में रेल की पटरी पर चलते-चलते आसपास के गाँव, खेत देख आते। थोड़े बड़े हुए तो दोस्तों की साईकल से दूर,जंगल-पहाड़ों की यात्रा कर आते। नौकरी लगने पर उन्होंने लगभग पूर्ण भारत भ्रमण किया। भ्रमण करते समय वे दर्शनीय स्थान तो देखते ही थे, साथ-ही-साथ स्थान विशेष के आध्यात्मिक व्यक्तियों से आध्यात्मिक चर्चा भी करते।

जप-जाप करते हुए जब भी उनका ध्यान लग जाता, ध्यान में उन्हें तीन आकृतियाँ एक के बाद एक नजर आतीं–

१. पशुपतिनाथ मंदिर (नेपाल) २. एक तपस्वी जो छः फुट लंबे थे तथा जिनकी नीली आँखें, गौर वर्ण तथा लंबी, श्वेत दाढ़ी थी। ३. एक टेकड़ीनुमा स्थान पर महादेव का मंदिर।

❖ ऐसे ही, नौकरी के कार्य के सिलसिले में वे कानपुर गए थे। तब वहाँ किसी कारण से बैंक की हड़ताल थी। वह कुछ दिन और चलने वाली है, ऐसा लगा। अतः स्वामीजी ने सोचा, क्यों न पशुपतिनाथ के दर्शन कर आएँ? वे नेपाल गए, पशुपतिनाथ के दर्शन किए। वहीं एक वृद्ध सज्जन जो सुदूर शिबू गाँव से आए थे, उन्होंने स्वामीजी से कहा, शिवबाबा आपकी राह देख रहे हैं, चलिए। स्वामीजी शिवबाबा से मिले तो जाना वे वही तपस्वी मुनि थे जिनके दर्शन उन्हें ध्यान में अक्सर होते थे।

❖ शिवबाबा ने अपनी सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ स्वामीजी में संक्रमित कीं तथा आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। स्वामीजी नेपाल से लौट आए।

❖ उनकी नौकरी यथावत् चल रही थी। शीघ्र उनका विवाह हुआ तथा एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र जब डेढ़ वर्ष का हुआ, तब एक और गुरु उनके घर आए तथा पत्नि की सहमती से स्वामीजी को हिमालय ले गए। वहाँ अनेक मुनियों, तपस्वियों तथा कैवल्यकुंभक योगियों को गुरु के रूप में मानते हुए स्वामीजी ने उनकी सेवा की। गुरु सेवा करते हुए उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

❖ प्रत्येक गुरु ने ज्ञान प्रदान कर दूसरे गुरु के पास स्वामीजी को भेजा। विभिन्न गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करते हुए स्वामीजी को ध्यान की उस पद्धति का पता चला जो प्रत्येक आत्मा के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती थी। वह ध्यान पद्धति धर्म, जाति, भाषा तथा लिंग से परे है अर्थात् विश्व की सभी आत्माएँ उस ध्यान पद्धति से ध्यान कर सकती हैं।

❖ गुरु आज्ञा से स्वामीजी उस ध्यान पद्धति को समाज में लाए। गुरुओं के प्रति समर्पण भाव के कारण ही गुरुदेव इस ध्यान पद्धति को जान सके अतः इसका नाम रखा गया– समर्पण ध्यान ।
विश्व का प्रत्येक मानव आत्मा के पूर्ण समर्पण द्वारा इस ध्यान के ज्ञान को प्राप्त कर सकता है।

❖ स्वामीजी के जीवन का उद्देश्य विश्व की सभी आत्माओं का आध्यात्मिक विकास तथा उन्हें जीते जी मोक्ष की स्थिति प्रदान करना है। इसलिए वे इस अमूल्य ज्ञान को विश्वभर में निःशुल्क बाँट रहे हैं। स्वामीजी स्वयं चैतन्य सागर हैं किंतु स्वयं को गुरु ऊर्जा का माध्यम मात्र मानते हैं। उनकी इस सौम्यता-सादगी को शत शत नमन!

– सहधर्मचारिणी गुरुमाँ

Gurutattva

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

www.gurutattva.org

https://Instagram.com/gurutattva

https://t.me/shreeshivkrupanandswami
https://t.me/Gurutattva

https://pinterest.com/gurutattva

https://facebook.com/gurutattvaworld

https://twitter.com/gurutattvaworld

Gurutattva

सभी की आध्यात्मिक उन्नति हो ऐसी शुभकामनाएँ ...

।। धन्यवाद ।।